आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 21 February 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा - *आज से ध्यान दे, हमें शक्तियों से और गुणों से सम्पन्न बनना ही है*

संगमयुग का वास्तविक वर्सा सर्वशक्तियाँ और सर्वगुण है। यूँ तो बाबा हमें भविष्य का स्वर्ग का राज्य भाग्य देने आया है। परन्तु उसे प्राप्त करने के लिए शक्ति सम्पन्न, गुण सम्पन्न, चरित्रवान, दिव्य बुद्धि से सम्पन्न बनना परम आवश्यक है।

इसलिए सभी ध्यान दे यही वह समय है, जब हम अपनी खोई हुई समस्त शक्तियाँ प्राप्त कर सकते है। एकदिन था जब हम परमधाम से इस धरा पर आये थे, सम्पूर्ण थे, शक्तियों में सम्पूर्ण, गुणों में भी फुल, मर्यादाओं में भी फुल, और पवित्रता में भी फुल।

धीरे धीरे हम अपनी अपनी शक्तियाँ गँवा दी। अब पुनः समय है शक्ति सम्पन्न बनने का। पहला ध्यान हम दे कि हमारी शक्तियाँ नष्ट न हो रही हो। व्यर्थ संकल्पों में, व्यर्थ देखने में। व्यर्थ बोलने में, व्यर्थ अवगुण देखने में।

परचिन्तन करने में, परदर्शन करने में। अवगुणी दृष्टि रखने में। ईर्ष्या-द्वेष में, घृणा नफरत में, काम क्रोध आदि विकारों में।

हमारी आन्तरिक शक्तियाँ नष्ट होती है। हमें पहले तो जो नष्ट होने का लीकेज है उसे बंद करना है। और फिर स्वयं को शक्तिशाली बनाने के लिए मन में शक्तिशाली विचारों की रचना करनी है।

सीख ले आप कम-से-कम दस सुन्दर और शक्तिशाली विचार, आपके पास जरूर रखें।

जैसे ....

" मैं कल्प कल्प का विजयी रतन हूँ .. माया मुझे हरा नहीं सकती .. इस माया को मैंने कल्प कल्प जीता है "

दुसरा ...

" मार्ग में चाहें कितनी भी परिस्थितियाँ आ जाये .. मैं अपनी स्थिति से विचलित नहीं हूंगा "

तीसरा ...

" मैं तो मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ .. इस संसार के सबसे शक्तिशाली आत्मा .. मेरे लिए कुछ भी इम्पॉसिब्ल नहीं "

चौथा ....

" मेरे साथ तो स्वयं भगवान है .. उसकी शक्तियाँ मेरे साथ काम कर रही है .. मुझे किसी का कोई भय नहीं "

इस तरह से सुन्दर संकल्प अपने पास नोट करके रखे। तो शक्तियाँ बढ़ती जायेगी। क्योंकि हमारा हर संकल्प से एनर्जी प्रोडिउस होती है। हमारा हर पावरफूल संकल्प हमें इनर पावर प्रदान करेगा।

" मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ .. मैं विजयी रतन हूँ .. मैं निर्भय हूँ .. मैं भगवान की संतान हूँ "

यह सब स्वमान के संकल्प भी हमें शक्ति प्रदान करेंगे। साथ साथ योगवल को हम बढ़ाते चले। योगवल से ही हमें शक्तियाँ मिलती है ।

पवित्रता का वल भी बहुत बड़ा वल है। इस वल को जितना बढ़ायेंगे हम शक्तिशाली बनते जायेंगे।

ऐसे ही ज्ञान चिन्तन भी हमें वल प्रदान करता है। तो अपनी शक्तियों में दिनों दिन बृद्धि करते चले।

गुण सम्पन्न भी हमें बनना है। कुछ गुणों पर हम विशेष ध्यान दे। संतुष्टता, सरलता, निर्भयता, अन्तर्मुखता, निरहंकारिता, शुभ-भावना, दृढ़ता ... इन गुणों पर विशेष ध्यान देंगे।

यह आठ दस गुण हमें गुण सम्पन्न बनाने में सम्पूर्ण भूमिका निभायेंगे। जो व्यक्ति गुणवान होता है वही सबको प्रिय लगता है।

तो आइये आज हम सारा दिन अपने पाँचों स्वरूपों का अभ्यास करें।

हम अपने देव स्वरुप को देखे .. वह भी .. " **गुणों से सम्पन्न और शक्तियों से सम्पन्न है** "

अपने आत्मिक स्वरुप पर नजर डालें .. " **मैं सभी गुणों से सम्पन्न, सम्पूर्ण पवित्र और शक्तिशाली हूँ** "

हम अपने पुज्य स्वरुप पर नजर डालें ... " *हमारे मन में सभी के लिए शुभभावनायें है .. हम दाता है .. हम रहमदिल है*"

हम अपने ब्राह्मण स्वरुप पर ध्यान दे .... " **भगवान के साथ** "

और फ़रिश्ते स्वरुप को देखे .... **" हम सम्पूर्ण पवित्र है "**

इन पाँचों स्वरूपों का चिन्तन करते रहेंगे आज। हर घन्टे में एकबार। तो यह पाँचों स्वरुप हमें शक्तिशाली बनायेंगे और गुण सम्पन्न भी।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org